तृतीय अध्याय

जन्मोत्सव पर श्री श्री माँ का ढाका आगमन

श्री श्री माँ ढाका से कृष्णनगर और बहरमपुर गयीं। वहाँ से विंध्याचल गयी थीं। विंध्याचल से चटगाँव और वहाँ से कक्स बाजार गयी थीं। कक्स बाजार में लगभग एक माह तक थीं। इसके बाद पुनः लम्बी यात्रा के लिए गयीं तो काशी, दिल्ली, बरेली, नैनीताल आदि स्थानों में गयीं। नैनीताल से प्राप्त खुकुनी दीदी के एक पत्र से ज्ञात हुआ कि जन्मोत्सव के अवसर पर माँ के ढाका आने की सम्भावना है।

नैनीताल से माँ जमशेदपुर होती हुई बारिशाल में श्रीयुत गिरिजा बाबू[1] के यहाँ एक आश्रम की स्थापना के उपलक्ष्य में गयीं। वहाँ से ढाका आते समय ज्योतिष बाबू के अनुरोध पर चाँदपुर उतरकर अपने जन्मस्थान खेवड़ा गाँव गयीं। खेवड़ा ग्राम में दादा महाशय का मातुलालय है। दादा महाशय मातुल-सम्पति बेचकर खेवड़ा गाँव छोड़ चुके हैं। दादा महाशय का मातुलालय तथा श्री श्री माँ के जन्मस्थान पर एक मुसलमान ने अपना भवन बना लिया है। खेवड़ा गाँव जाकर ज्योतिष बाबू आदि ने श्री श्री माँ की जन्मभूमि के ऊपर एक बृहद पुआल का ढेर देखा। माँ की जन्मभूमि को खरीदा जा सकता है या नहीं, इस सम्बन्ध में बहुत दिनों से जल्पना चल रही है।[2]

१९ मई, सन् १९३७ इ, बुधवार। श्री श्री माँ चाँदपुर से ढाका वापस आ गयी। माँ का स्वागत करने के लिए केवल भूपति बाबू

१ श्रीयुत गिरिजाप्रसन्न सरकार। आप कृषि विभाग में नोकरी करते हैं और श्री श्री माँ के आदिभक्त हैं।

२ यह स्थान खरीद लिया गया है और खेवड़ा ग्राम में एक आश्रम का निर्माण किया गया है।

नारायणगंज गये थे। मेरी पत्नी अस्वस्थ थी, इसलिए मैं नहीं जा सका था। तीसरे पर ६ बजे आश्रम आने पर देखा कि श्री श्री माँ अनेक औरतों से घिरी मैदान में टहलने के लिए जा रही हैं। आश्रम में आकर बाबा भोलानाथ, ज्योतिष बाबू, स्वामी अखण्डानन्दजी तथा स्वामी शंकरानन्दजी को प्रणाम किया। किसी के साथ विशेष बात नहीं हुई। मेदान मैं आकर माँ की प्रतीक्षा करने लगा। माँ कुछ देर टहलने के बाद आश्रम में आ गयी। उस समय भी माँ के चारों ओर महिलाओं की अपार भीड़ थी। मैं जरा दूर खड़ा माँ का दर्शन करने लगा। अचानक माँ की निगाह मुझ पर पड़ी।

उन्होंने मुझसे पूछा "पिताजी मजे में हो? इस बार कैसे झंझट में फँस गये?"

मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। उत्तर देने पर जोरों से चिल्लाना पड़ता वर्ना माँ सुन नहीं पातीं।

मेरे निकट कुछ भी नया नहीं है

श्रीयुत् मोतीलाल राय सपत्नीक माँ से मिलने के लिए आये हैं। मोती बाबू की पत्नी जीवन में प्रथम बार आयी हैं। मोती बाबू के साथ प्रमथ बाबू भी थे।

मोती बाबू की पत्नी ने ज्योंही माँ को प्रणाम किया त्यों ही प्रमथ बाबू ने माँ से कहा – "माँ, इन्हें (मोती बाबू की पत्नी को) ठीक से देख लो, क्योंकि तुम्हारे निकट नयी हैं।"

यह सुनकर माँ हँसती हुई बौली – "मेरे निकट कुछ भी नया नहीं है, सभी पुरातन है।"

माँ लोगों के साथ दो–चार बातें करने के बाद दूसरी ओर बढ़ गयीं। मैं माँ के पीछे–पीछे जाकर खुकुनी दीदी से बातचीत करने लगा। दीदी की जबानी पता चला कि माँ उत्सव के बाद कैलास जानेवाली

हैं। जिन दिनों माँ अलमोड़ा में थीं, कुछ पहाड़ी लड़कियों से भेंट हुई थी। उन लोगों का निवास कैलास से पाँच मील दूर है। अलमोड़ा में वे सब पढ़ने–लिखने आयी थी। माँके साथ उनका पूर्व परिचय नहीं था। दस मिनिट नाम करने के लिए श्री श्री माँ के चित्र सहित एक सूचना लोगों में वितरित की गयी थी। यह सूचना इनमें से किसी एक लड़की के हाथ लग गयी थी। चूँकि प्रकाशित चित्र से माँ की वर्तमान आकृति से सादृश्य बहुत कम था, फिर भी उन्होंने माँ को गाड़ी में जाते देख पहचान कर गाड़ी रूकवायी और सभी ने प्रणाम किया।

इस प्रथम दर्शन के बाद से वे सब माँ के प्रति गम्भीर रूप से आकर्षित हुई थीं। इसके बाद से वे सब माँ की नाना प्रकार से पूजा करने लगीं। गीत बनाकर, कीर्तन करने माँ के प्रति अकृत्रिम भक्ति का परिचय देने लगीं। इन लड़कियों के सादर अनुरोध को वे टाल नहीं सकी और कैलास–दर्शन करने की स्वीकृति उन्होंने दे दी।

दीदी के साथ और भी तरह–तरह की बातें होती रही। शाम होते देख में घर चला आया। इतनी भीड़ में माँ के साथ बात करने की सुविधा प्राप्त नहीं होगी जानकर जरा देर से आश्रम पहुँचा। वहाँ जाकर देखा कि अभी तक पर्याप्त भीड़ है।

माँ को प्रणाम करके बेठते ही माँ ने पूछा–"माताजी कैसी हैं?"

मैंने कहा – "ठीक हैं।"

गणेश बाबू माँ के पास बैठे स्वरचित कविता पाठ करने लगे। खुकुनी दीदी माँ को खिलाने लगी। दीदी माँ भी पास ही बैठी थीं। माँ का भोजन समाप्त होने पर दीदी माँ ने मुझे प्रसाद का एक बड़ा लड्डू दिया।

इसके बाद माँ घर से बाहर निकलकर नामघर की ओर बढ़ीं। आश्रम के प्रांगण में आकर काफी देर तक लोगों से खड़ी होकर बातें करती रहीं।

माँ ने कहा–"बरेली की लड़कियाँ अन्य स्थानों की लड़कियों से कहीं अधिक स्वाधीन भाव से धूमती फिरती हैं।" माँ ने यह भी बताया कि जब वे गयी थीं तब घर–गृहस्थी का काम निपटा कर माँ के साथ अधिक समय व्यतीत करती थी। एक दिन उन लोगों ने माँ को कृष्ण रूप में श्रृंगार कर, बांसुरी लेकर त्रिभंग रूप में खड़ा करके फोटो खींचा था। खुकुनी दीदी के निकट सुन चुका हूँ कि ये महिलाएँ माँ को श्रीकृष्ण रूप में कल्पना करके अपने को गोपी भाव में समझकर उनके साथ संगत करती रहीं और माँ को संतोष देती रहीं।

श्री श्री माँ और श्रीयुक्ता अपर्णा देवी

बातचीत के सिलसिले में अपर्णा देवी की चर्चा चल पड़ी। अपर्णा देवी के पति जब बीमार पड़े तब स्वप्न में उन्होंने माँ का दर्शन किया। और जब स्वप्न में उन्होंने माँ का दर्शन किया तब समझ गयीं कि वे अच्छे हो जायँगे।

एक बार उनके पति बहुत बीमार हुए। एक रात अपर्णा देवी ने स्वप्न में देखा कि माँ आकर कह रह रही हैं कि उनके (अपर्णा देवी के) बक्से में एक कीमती साड़ी है, अगर उसे पहनकर पति की शय्या के बगल में बैठ जाय तो उनके पति स्वस्थ हो जायेंगे। माँ ने जिस साड़ी का वर्णन किया था, ऐसी साड़ी उनके पास है, यह बात वे भूल चुकी थीं। किन्तु बक्सा खोलकर खोजने के बाद वैसी साड़ी मिल गयी। वे उस साड़ी को पहनकर पति की शय्या के पास जाकर बैठ गयी। रोग यन्त्रणा से क्षिप्त स्वामी पत्नी की इस सज्जा को देखकर मन–ही–मन जल उठे। यह बात पति की आकृति को देखते ही वे समझ गयीं। लेकिन स्वप्न वृत्तान्त बताने के लिए उनका हृदय छटपटाता रहा, पर बता नही पा रही थीं।

इतना कहकर माँ खूब हँसने लगी और हम सब भी उनके साथ हँसने लगे।

माँ जमशेदपुर की चर्चा करती हुई कहने लगी – "इस बार जमशेदपुर में मुझे उपलक्ष्य करते हुए उन लोगों ने काफी साजसरंजाम किया था। फूल–पत्तियों से गेट बनाया था और रंग–विरंगे लट्टुओं की सजावट किया था। शामियाना टांगकर पण्डाल बनाया था। हम लोग चार बजे के लगभग जमशेदपुर पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही मैंने कहा – 'आसमान में बादल छा रहे हैं।'

ज्योतिष ने कहा – 'नहीं माँ यह बादल नहीं है। यहाँ के कारखानों के धुएं से आसपास ढका रहता है, इसीलिए ऐसा दिखाई दे रहा है।'

"मैंने फिर कुछ नहीं कहा। हम लोगों को शामियाना के नीचे बैठाया गया। अंधकार बढ़ता जा रहा है देखकर कुछ देर के लिए बत्तियाँ जला दी गयीं। शाम के लगभग जब यह पता चला कि हम लोग अनाहार हैं तब हम लोगों को स्नान तथा आहार करने के लिए ले गये। ज्योंही हमने घर में प्रवेश किया त्योंही प्रबल वेग से आँधी–पानी आया। देखते ही देखते पण्डाल छिन्न–भिन्न हो गया और पानी–कीचड़ से सारा स्थल सराबोर हो गया।"

"बाद में उन लोगों ने अफसोस करते हुए कहा – 'माँ, तुम्हारे लिए इतने भव्य रूप में झालर सजाकर इन्तजाम किया था, यह सब दिखा नहीं सका। सब पण्ड हो गया।'"

मैंने उन लोगों से कहा कि तुम लोगों की सजावट थोड़ी देर तक देखती रही।"

खुकुनी दीदी – केवल जमशेदपुर क्यों, तुम जहाँ कहीं भी गयी हो, इस तरह पानी बरसता रहा। जब तुम कलकत्ता आयी तब गर्मी के कारण व्याकुल थे। ज्योंही तुम्हारा पदार्पण कलकत्ता में हुआ त्योंही पानी बरसा और सारा शहर ठण्डा हो गया। खेवड़ा में भी ऐसा ही हुआ था। ढाका में भी पानी बरस रहा है।

माँ–आज सवेरे जब आसमान में बादल छाये हुए थे तब मैं स्टीमरकी रेलिंग पकड़कर खड़ी थी। अखण्डानन्दजी मेरे पास खड़े थे।

अखण्डानन्दजी ने कहा – "माँ, यह बादल हमें नारायणगंज में बरसते मिलेंगे या ढाका में?"

नारायणगंज पहुँचने के पहले ही पानी बरसने लगा। माँ ने कहा – "मेरा बिछौना ठीक कर दो। अगर मैं चादर ओढ़कर सो गयी तो पानी बरसना रुक जायगा।" वास्तव में वही हुआ। हम लोग न तो नारायणगंज में भीगे और न ढाका में।

अब माँ नामघर की ओर गयीं। उनके लिए शय्या बिछायी गयी। वे सो गयी। मैं प्रणाम करने के बाद घर चला आया। उस समय रात के एक बज चुके थे।

२० मई, १९३७ ई, गुरुवार। आज सवेरे जब आश्रम पहुँचा तब दिन के १० बज गये थे। आश्रम में आकर भोलानाथ को प्रणाम किया। यज्ञकुण्ड के ऊपर एक मंदिर बनाने का कार्यक्रम चल रहा था और पंचवटी में एक अन्य यज्ञकुण्ड बन रहा था। भोलानाथ ने मुझे यह सब दिखाया।

श्री श्री माँ का सच्चिदानन्दवाला कौड़ी खेलना

पंचवटी में कुछ देर रुकने के बाद माँ के पास आया। देखा– जमशेदपुर का एक भक्त माँ को भोग दे रहा है। कुछ देर बाद माँ सच्चिदानन्दवाला कौड़ी खेलने लगीं। पहली बाजी श्रीयुत् प्रफुल्ल घोष महाशय की बड़ी लड़की जीत गयी। उसके साथ–साथ और कौन–कौन जीता, इसका निर्णय करने के लिए खुकुनी दीदी बार–बार व्यक्ति की गणना करने लगीं। खेल में विजयी होनेवालों की ओर इशारा करते हुए बताया गया कि ये ही लोग कीर्तन करेंगे।

इस पर खुकुनी दीदी संशय में पड़ गयीं तो माँ ने कहा– खुकुनी, आज तुझे क्या हो गया?''

यह बात सुनकर हम लोग हँस पड़े। माँ की बातों में इतनी ममता और इस मधुर ढंग से उन्होंने अनुयोग किया जो सुनने में भली लगी। इस बार खेल में खुकुनी दीदी हार गयीं। फलतः आंखें बन्द कर वे जप करने लगीं।

जिस समय माँ के कमरे में यह खेल हो रहा था, उस समय एक वैष्णवी मधुर कंठ से कीर्तन कर रही थी।

माँ ने पूछा –''नामघर में कौन गा रहा है? मैं जाकर देख आऊँ।''

पर प्रफुल्ल बाबू ने जाने नहीं दिया। खेल पुनः आरंभ हुआ। खुकुनी दीदी एक बार जीत गयीं। पुनः कीर्तन आरंभ हुआ। माँ खुकुनी दीदी के साथ खेल रही थीं। फलतः माँ ने गाना प्रारंभ किया और उनका साथ सभी देने लगे। माँ हाथों में करताल लेकर देवदुर्लभ कंठ से गाने लगीं–

''जय राधे राधे कृष्ण कृष्ण
हरे राम हरे हरे।
एनाम बल बदने सुनाओ काने
बिलाओ जीवेर द्वारे द्वारे।''

हम लोग मुग्ध होकर सुन रहे थे । गीत समाप्त होते ही माँ मुझे सच्चिदानन्द कौड़ी वाले खेल का इतिहास बताने लगीं ।

माँ ने कहा–''हम लोग जब कॉक्सबाजार में थे, उन दिनों अनेक बच्चे मेरे पास आया करते थे । उनके साथ क्या बातचीत करती या कब तक करती ? मन लगाकर पढ़ना–लिखना, सच बात कहना, माँ–बाप की आज्ञा मानना आदि बातें कहा करती थी । जब समुद्र

के किनारे घूमने जाती तब वे सब समुद्र के किनारे से कौड़ी बीनकर लाते थे । यह देखकर मैंने उन लोगों से कहा–आओ तुम लोगों को एक नया खेल सिखा दूँ । इसी समय से सच्चिदानन्द–कौड़ी खेलने का नियम[1] तैयार हुआ और बच्चों के

१. मेरे स्नेहपात्र आत्मीय श्रीमान् यतीन्द्रचन्द्र मजुमदार एम.एस.सी. इन दिनों माँ से मिलने के लिए काक्सबाजार गये थे । श्री श्री माँ के साथ कौड़ी खेलने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ था । उसके पुत्र से मुझे सच्चिदानन्द कौड़ी खेलने के बारे में जानकारी प्राप्त हुई थी । जब खेल के बारे में मेरी जिज्ञासा बढ़ी तो उसने पत्र द्वारा जो कुछ सूचित किया वह यों है–

लगभग दिन भर छोटे–बड़े बच्चों को लेकर माँ कौड़ी खेलती है। माँ के तम्बू के निकट ही स्कूल है । बच्चे अधिक देर तक माँ के पासे रहते हैं । सच्चिदानन्द कौड़ी खेलने के नियम यों है ।

खेल में युग्म संख्यक व्यक्ति होना आवश्यक है । दोनो पार्टियों में समान व्यक्ति रहेंगे । कौड़ी फेंकने के लिए बीच मे जगह छोड़कर लोग गोलाकार रूप में बैठेंगे । पर वे इस तरह बैठेंगे कि एक आदमी एक पार्टी का, उनके बगल में दूसरी पार्टी का रहेगा । इस प्रकार गोल बनाया जायगा ।

खेल में सात कौड़ी होते हैं । कौड़ी ठीक होने चाहिए । कुछ कौड़ियाँ इस प्रकार की होती है कि घूमते–घूमते वे पट हो जाती है । ऐसी कौड़ी निकाल देना चाहिए ।

१–दान में एक कौड़ी चित्त होने पर एक होता है और उसे पुनः दान प्राप्त होता है।

२–दान में दो चित्त होने पर कुछ नहीं होता और न दान मिलता है ।

३–दान में तीन कौड़ी चित्त होने पर कुछ नहीं होता और न दान मिलता है।

४–दान में चार चित्त होने पर 'सत्' (सत्य) होता है और पुनः दान प्राप्त होता है।

५–दान में पाँच चित्त होने पर 'चित्' (चैतन्य) होता है और पुनः दान मिलता है ।

६–दान में छः चित्त होने पर ''आनन्द'' होता है और पुनः दान मिलता है।

७–एक आदमी के जीतने पर पूरे दल की जीत होती है ।

८–पहला सत्य, इसके बाद चैतन्य तब आनन्द करना पड़ता है तब जीत होती है।

९–एक–एक कर चार दान में चार होने पर 'सत्य' होता है । दूसरी ओर एक दान में चार कौड़ी चित्त हो तो सत्य होता है । चैतन्य और आनन्द के सम्बन्ध में यही नियम है ।

१०–सत्य बनाने के पहले अगर किसी दान में चैतन्य या आनन्द बनता है तो वह खराब हो जाता है, लेकिन दान मिलता है । सत्य पहले करना ही पड़ेगा।

११–चार दान में हो या एक दान में सत्य हो जाने पर चैतन्य होने के पहले एक दान में अगर छः चित्त होकर आनन्द हो जाता है तो दल की जीत हो जाती है । अर्थात् सत्य हो गया है, चैतन्य न होकर आनन्द हो सकता है, पर सत्य के बाद छः दान में एक–एक करके छः होने पर आनन्द नहीं होगा । उस वक्त पाँच पर चैतन्य होकर हाथ में एक रह जाता है । अर्थात् एक–एक करके जोड़कर आनन्द बनाने के लिए सत्य, चैतन्य एवं आनन्द सभी करना होगा । उस वक्त चैतन्य को अलग नहीं किया जा सकता ।

१२–अगर हाथ में एक रहे और इसके बाद सातों कौड़ी चित्त हो जाय तब जीत हो जाती है । यहाँ सत्य चैतन्य या आनन्द की आवश्यकता नहीं होती।

१३–सातों चित्त होने पर पुनः दान प्राप्त होता है ।

१४–मगर सातों कौड़ी पट पड़ जायें तो हाथ में जो कुछ रहता है, वह सब बेकार हो जाता है । पर दान पुनः प्राप्त होता है । सत्य या चैतन्य बना लेने पर वह नष्ट नहीं होता । मान ले कि किसी को सत्य या चैतन्य प्राप्त हुआ है । इसके बाद तीन दान में एक–एक करके तीन चित्त हुए। इसके बादवाले दान में सातों कौड़ी पट पड़ गये । इससे सत्य या चैतन्य नष्ट नहीं होता । लेकिन हासिल जो रहेगा, वह नष्ट हो जायगा ।

१५–पार्टी का एक व्यक्ति सत्य, दूसरा चैतन्य और तीसरा आनन्द बनाता है तो जीत नहीं होगी । प्रत्येक को खेलते समय अलग–अलग खेलना होगा।

१६–दान में अगर दो या तीन कौड़ी चित्त होता है तो दान समाप्त हो जाता है तब बगल का खिलाड़ी दान पाता है । इस प्रकार खेल घूमता रहता है। दो या तीन के अलावा कोई भी दान पड़ने पर पुनः दान मिलता है ।

१७–दान में एक–एक करके दो या तीन चित्त हो जाँय तो जो हासिल रहता है, वह रह जाता है, नष्ट नहीं होता । इसके बाद खेल जब घूमकर पुनः अपना दान आता है तब जो दान मिलता है, उसे हासिल में जोड़ लिया जाता है ।

१८–खेल में जो लोग जीतते हैं, उन्हें हरिबोल हरिबोल कहते हुए कीर्तन करना पड़ता है । जो लोग हारेंगे, उनमें से प्रत्येक को १०८ बार इष्टमंत्र जप करना होगा। जिनकी दीक्षा नहीं हुई है, ऐसे लोग "माँ" अथवा कोई भी ईश्वर वाचक नाम जपते रहेंगे। कौड़ी खेलने का नियम यहाँ तक लिख गया । ठीक से समझा सका या नहीं, पता नहीं । खेलते समय अगर कहीं असुविधा ज्ञात हो तो सूचित कीजिएगा ।

कौडी खेलने के बारे में माँ और बाबा भोलानाथ का झगड़ा उल्लेखनीय है। बच्चों के साथ गोल बनाकर माँ कौड़ी खेलने बैठ जाती है । एक ओर माँ और दूसरी और भोलानाथ । साथ में स्वामीजी भी रहते हैं । खेल के बाद कौन कितनी बार जीता है, इस प्रश्न पर माँ और भोलानाथ में झगड़ा होता है । एक दूसरे को 'काँठा' कहते हैं । जो हार जाता है वह किसी और दिन जब वे जीते थे, उन दिन की चर्चा करते हुए अपने पक्ष को बलवान् बनाते हैं । इसके बाद आपस में हँसी होती है।

किसी दान में दो कौड़ी आपस में सटे रहने के कारण चित्त हैं, पर एक को हटाते दूसरा लुढ़ककर पट हो जा सकता है । इन दोनों को लेकर माँ और भोलानाथ में झगड़ा होता है । एक कहता है तीन हुआ है, दूसरा कहता है चार हुआ है ।

किसी समय दान देते समय माँ कहती हैं–'चलो, भगा के (भगवान् के) हाथ छोड़ रही हूँ । देखूँ क्या होता है ।'

किसी समय शायद भोलानाथ की पार्टी के किसी लड़के को लक्ष्य करके माँ कहती हैं–'मुझसे मांग, कहो, माँ, मुझे जिता दो । वर्ना हार जायगा।' भोलानाथ दोनों हाथ हिलाकर ऐसा करने को मना करते हैं । बालक कहता है–'नहीं, मैं मांगूँगा नहीं । तुम हिन्दू हो और मैं ब्राह्म हूँ ।'

माँ कहतीं–'मैं भी ब्राह्म हूँ. फिर भी तू मांग ।'

बालक कहता–'नहीं, मैं मांग नहीं सकता ।'

माँ–'ठीक है तब खेल । अब तू जीत नहीं सकता ।'

खेल चालू रहता है । भोलानाथ हार जाते हैं । माँ तब कहती हैं–'देखा, अब मांग ले । कह, मुझे जिता दीजिए, वर्ना इस बार भी तू हार जायगा।'

भोलानाथ इस बार भी इशारे से मना करते हैं ।

बालक कहता है–'नहीं, तुमसे यह मांग नहीं सकता ।'

इस प्रकार एक के बाद एक करके भोलानाथ छः बार हार जाते हैं । प्रत्येक बार खेल के बाद माँ बालक से कहती है–देखा न, सिर्फ हारता जा रहा है। एक बार माँग कर देख–माँ मुझे जिता दो । देखना तब जीत जायगा। पर लड़का इसे स्वीकार नहीं करता ।

माध्यम से खेल प्रारम्भ किया गया । मुन्सिफ बाबू की पत्नी आदि अनेक औरतें आती थीं । उनके साथ कौड़ी खेला करती थीं । खेल में हार जाने पर उनसे जप करवाती थी वर्ना बच्चे भला जप क्यों

करते ? काक्स बाजार में इस खेल की धूम मच गयी थी । बच्चे पहले से ही करताल और मृदंग लेकर तैयार रहते थे और खेल में विजयी होते ही बाजा बजाते हुए कीर्तन प्रारम्भ कर देते थे । लोग दूर से कीर्तन सुनकर समझ जाते थे कि सच्चिदानन्द खेल आरम्भ हो गया है । किसी बालक ने जो कभी नाम या जाप नहीं किया था, वही एक दिन कौड़ी के खेल में विजयी होकर हजार बार जप करता था ।''

द्वितीय बार खेल समाप्त हुआ तो तृतीय बार खेल प्रारंभ हुआ। तभी माँ ने कहा–''अब मैं नहीं खेलूँगी । मैं इम्पायर बनकर बैठ रही हूँ ।''

माँ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग इधर करने लगी हैं । जैसे साइलेण्ट, अननेससरी, फाइन आदि । कभी–कभी अंग्रेजी में दो–एक भी कहती हैं ।

कुछ देर खेल चलने के बाद माँ नामघर की ओर चल पड़ी। मैं भी पीछे–पीछे चल पड़ा । देखा, माँ वैष्णवी को दर्शन दे, कुछ देर नाम सुनती रहीं । बाद में अपने कमरे में वापस आ गयी । मार्ग में एक व्यक्ति ने माँ के हाथ में दो कमल फूल देकर उन्हें प्रणाम किया। उसका सारा शरीर भीगा हुआ था । शायद तालाब से दो फूल तोड़कर सीधे माँ के पास चला आ रहा है । देर होते देख मैं माँ को प्रणाम कर वापस चला आया ।

तीन बजे के लगभग मूसलाधार पानी बरसने लगा और पाँच बजे तक बरसता रहा । पानी कम होने पर आश्रम आया । यहाँ आकर देखा–माँ नामघर में हैं । महिलाएँ माँ के साथ कीर्तन कर रही हैं। हम लोग खड़े होकर कीर्तन सुनने लगे । कुछ देर बाद माँ को अखण्डानन्दजी के कमरे में बुलाया गया । हम लोग नामघर से बाहर आये । सुना कि श्रीमती Jennings ने अमेरिका वापस जाने के लिए अनुमति की प्रार्थना करने के लिए माँ के निकट एक तार

भेजा है । यह अमेरिकी महिला कलकत्ता में हुए विश्व धर्म सम्मेलन के उपलक्ष्य में आयी और भारत के विभिन्न स्थानों में घूम-घूम कर साधु-संतों से मिलती-जुलती रही । पाण्डेचेरी स्थित अरविन्द आश्रम में आने पर श्री श्री माँ आनन्दमयी का नाम उन्होंने सुना । इसके बाद नैनीताल आकर उन्होंने माँ का दर्शन किया और इनके अतुलनीय व्यक्तित्व के प्रति मुग्ध हो गयीं । हम लोग जब इस प्रकार बातें कर रहे थे तभी एक सज्जन आये और मुझे बताया कि माँ मुझे बुला रही हैं ।

मैं तुरंत स्वामीजी के कमरे में माँ के पास आया । खुकुनी दीदी ने कहा-"आपको तुरंत बुलाकर इन चित्रों को दिखाने के लिए माँ ने आदेश दिया । इसीलिए आपको बुलाया है ।"

मैंने उन चित्रों को देखा । सभी माँ के चित्र थे और सभी सुन्दर थे ।

२१ मई, १९३७ ई. शुक्रवार । आज सवेरे लगभग १० बजे आश्रम में गया तो मोती बाबू, प्रमथ बाबू, शचीन बाबू आदि से मुलाकात हुई । माँ अपने कमरे के बरामदे में बैठी हैं ।

प्रमथ बाबू ने माँ से कहा-"माँ, तुम्हें गठरी की तरह दो बार स्थान परिवर्तन करते देखा, पर इससे क्या लाभ हुआ ? महिलाओं के कारण तुम्हारे निकट हम लोगों को अग्रसर होने का मौका नहीं मिलता।"

माँ हँसने लगी ।

नगेन-यह सब कहने से फायदा । आजकल लड़कियों का जमाना है ।

माँ-(हँसकर) लड़कियाँ ठीक होने पर लड़के भी ठीक होंगे ।

इसी समय खुकुनी दीदी आकर माँ का मुँह धुलाने ले गयीं । जाते-जाते माँ ने प्रमथ बाबू से कहा-"अतृप्त बातें कहकर अतृप्त रह जाओ। जिससे तृप्ति मिले, वही उपाय करना चाहिए ।"

मुँह धोने के पश्चात् माँ आकर यज्ञ मंदिर का प्लान देखने लगी और उसकी स्वीकृति दी । सुना कि सोलेन के राजा ने इस मंदिर के निर्माण का व्यय दिया है ।

मेरी भी कचहरी है

माँ को भोजन कराने के लिए ले जाया गया । प्रमथ बाबू और मोती बाबू माँ के पास जाकर थोड़ा प्रसाद ले अपने–अपने घर चले गये । कुछ देर बाद माँ आकर अपने कमरे के सामने वाले बरामदे पर बैठी । कुछ देर तक इधर–उधर की बातें होती रही । अचानक माँ प्रमथ बाबू और मोती बाबू के बारे में पूछने लगी ।

मैं–वे लोग चले गये ।

माँ–क्यों ?

मैं–उन्हें कचहरी जाना था ।

माँ–(हँसकर) मेरी भी कचहरी है । मैं जब चादर ओढ़कर पड़ी रहती हूँ तब कचहरी में रहती हूँ । विभिन्न जगह घूमती रहती हूँ।

सुना कि आज माँ चादर ओढ़कर पड़ी थी । प्रमथ बाबू ने आकर उन्हें उठाया था । माँ स्वयं उठकर बैठ जायें इसकी प्रतीक्षा उन्होंने नहीं की । शायद माँ ने इन घटनाओं को लक्ष्य करके ये बातें कही। जब माँ तन ढाँककर सोती है तब हम लोग कहते हैं कि माँ इस समय घूमने निकली है । आज देखा कि इस बात को माँ ने स्वयं स्वीकार किया ।

इसी समय पुनः श्रीमती Jennings की चर्चा चल पड़ी ।

माँ ने कहा–"संभ्रांत घर की लड़की है न, बड़ी शान्त तथा गंभीर भाव है । हर वक्त वह बाते नहीं करती थी । शान्त भाव से बैठी रहती थी । दूसरों को शान्त रखने की शक्ति उसमें थी ।"

मैं–क्या वे भक्ति–पथ में साधना करती थी ?

माँ–नहीं, पर भक्ति जीवन के लिए साधारण पथ होता है, उसका प्रकाश सभी पर थोड़ा पड़ता है । जब वह आत्मस्थ होने का प्रयत्न करती तब उसकी अजानकारी में कभी–कभी उसकी आँखों से पानी निकलता था ।

इतना कहकर माँ हँसने लगीं ।

एक भक्त–उनके साथ आप कैलास जानेवाली थीं ?

माँ–हाँ, उसने मुझसे पूछा था कि कैलास जाने पर उसकी कोई आध्यात्मिक उन्नति होगी या नहीं तथा मैं उसे जाने को कहूँ या नहीं, अर्थात् अगर मैं जाने को कहूँ तो वह जायगी । तुम लोग तो मेरा रंग–ढंग जानते ही हो । मैंने उससे कहा कि कैलास जाने पर आध्यात्मिक उन्नति होती है, पर वह संस्कार के अनुसार ही होता है, अर्थात् जो लोग कैलास को किसी विशेष देवता का विशेष स्थान समझते हैं, वे लोग वहाँ जाकर इन भावों के द्वारा भावित होते हैं, लेकिन जिनमें यह भाव नहीं होता, उनके लिए स्थान दर्शन मात्र होता है ।

श्री श्री माँ के सम्बन्ध में ज्योतिष बाबू की अभिज्ञता

२२ मई, १९३७ ई., शनिवार । आज आश्रम आते–आते दस बज गये । आते ही सुना कि माँ अभी तक शयन कर रही है । श्रीयुत् ज्योतिष बाबू को पंचवटी में बातें करते देख उनके पास जाकर बैठ गया । प्रमथ बाबू भी मेरे साथ गये । चारु बाबू भी वहीं मौजूद थे।

ज्योतिष बाबू श्री श्री माँ के बारे में बातें कह रहे थे । मैंने ज्योतिष बाबू से कहा–"सुना है कि आपने एक बार श्री श्री माँ का देवी मूर्त्ति के रूप में दर्शन किया था । कृपया उस घटना के बारे में बताइये ।"

ज्योतिष बाबू कहने लगे–"उन दिनों माँ शाहबाग में रहती थी। एक दिन भोर के वक्त माँ से मिलने के लिए गया तो नाचघर में बैठा। माँ, भोलानाथ, मटुरी पिसीमां (बुआ) उस समय सो रही थी। अचानक देखा कि श्री श्री माँ के कमरे का दरवाजा खुल गया और दरवाजे के समीप एक ज्योतिर्मयी देवी मूर्त्ति प्रकट हुई । उसे देखकर मैं बहुत चकित रह गया। सोचा, दिन के वक्त जाग्रत् अवस्था में यह क्या देख रहा हूँ । दृष्टि भ्रम मालूम नहीं हुआ । मेरे देखते ही देखते वह देवी मूर्त्ति अन्तर्हित हो गयी और उस कमरे से हम लोगो की माँ निकली। सहज, सरल, मंथर गति से वे हमारी ओर आ रही थीं । विचार–बुद्धि से मैं कभी भावुकतावश छोटा नहीं देखता । फलतः मन ही मन एक तिकड़म सोचा चण्डी से मन ही मन एक देवी स्तोत्र पाठ करने लगा । मैंने सोचा कि अगर ये वास्तव में देवी होगी तो निश्चित रूप से इस स्तोत्र से प्रसन्न होकर पुरस्कारस्वरूप मुझे कुछ देंगी । श्री श्री माँ धीर गति से अपने शयन कक्ष से चलकर नाचघर आते वक्त जमीन से कुछ घास के फूलों को तोडती हुई माँ जब मेरे सम्मुख आयी तब ज्यों ही मैंने उन्हें प्रणाम किया त्योंही उन्होंने उन फूलों को मेरे मस्तक पर आशीर्वाद के रूप में फेंक दिया ।"

ज्योतिष बाबू ने आगे कहा–"इन दिनों मुझे बराबर यह जानने की इच्छा बनी रही थी कि ये कौन है ? इसीलिए मैं अक्सर माँ से प्रश्न किया करता था–'माँ तुम कौन हो ?' एक दिन उन्होंने कहा–'यह बाद में जान सकोगे ?' एक और दिन बोली–अहं ज्ञान रहने पर यही नहीं बताया जा सकता कि मैं कौन हूँ ? मुझमें अहं ज्ञान बिलकुल नहीं है । फलतः तुम लोग जो कहते हो, मैं वही हूँ ।"

इसके बाद थोड़ा गंभीर होकर बोली–"तुम और क्या जानना चाहते हो ?"

इस प्रकार के स्वर में इतने असाधारण आकृति से माँ ने इन बातों को कहा कि उसे देख और सुनकर मेरी आत्मा कांप उठी । मैं और कुछ नहीं कह सका । इसके बाद से मैंने कभी कोई प्रश्न नहीं किया ।

समय काफी हो जाने के कारण मैं घर चला आया । आते समय देखा कि माँ सोकर उठ गयी है ।

लगभग ३–३० बजे आश्रम जाने पर ज्ञात हुआ कि माँ शाहबाग में घूमने गयी है । इस बार नैनीताल से वापस आते समय गोदावरी नामक एक पहाड़ी लड़की को साथ ले आयी है । शायद उसे शाहबाग दिखाने के लिए ले गयी है । मैं भी शाहबाग गया ।

मुझे देखते ही माँ ने कहा–"यहाँ जितने पेड़ लगा गयी थी, अब वे बड़े हो गये हैं ।"

खुकुनी दीदी ने मुझसे पूछा–"इसके पहले आप शाहबाग देख चुके हैं या नहीं ?"

माँ ने उत्तर दिया–"पिताजी देख चुके हैं और इसके लिए इनसे मुझे अनुयोग सुनना पड़ा है ।"

मुझे लेकर माँ जिस दिन शाहबाग में आयी थी, उस दिन घूमते समय शाहबाग के सुरक्षा अधिकारी ने माँ से शिकायत करते हुए कहा था कि इस बाग में प्रवेश निषिद्ध है, क्योंकि अक्सर नवाब साहब की बेगमें यहां घूमने आती है ।

माँ ने कहा–"उसके बाद से यहां घूमने के लिए कभी नहीं आयी । आज पहली बार आ रही हूँ; कारण वे लोग (नवाब साहब की बेगमात) यहां इन दिनों नहीं हैं ।"

इतना कहकर माँ हँसने लगी ।

शाहबाग से माँ गोदावरी तथा ३–४ अन्य महिलाओं को साथ लेकर सिद्धेश्वरी चली गयी । हम लोग आश्रम लौट आये ।

सिद्धेश्वरी से माँ शाम को वापस आयी और नामघर में आकर बैठ गयी । कुछ देर बाद मंदिर में आरती आरंभ हुई । हम लोग चुपचाप आरती देखने लगे ।

आरती के बाद भूपति बाबू आये । उन्होंने माँ के पास आकर कहा–"माँ, हम लोगों को एक गीत सुनाओ । तुम महिलाओं को बहुत गीत सुनाती हो । हम लोगों को भी एक सुनाओ ।"

पहले माँ राजी नहीं हुई । बाद में स्वयं ही अपनी इच्छा से दो गीत गाकर सुनाये । एक हिन्दी और एक बंगला । मधुर कण्ठ से तन्मय होकर वे गाती रही । इन गीतों को सुन कर सभी के अन्तर पसीज गये ।

इसके बाद भूदेव बाबू ने अनुरोध किया कि वे माँ से हिन्दी में बातें सुनना चाहते है । माँ ने कहा–"तुम लोग प्रश्न करो । मैं हिन्दी में उत्तर दूँगी ।"

आत्म–परिचय देने में माँ की असहमति

भूदेव बाबू–लोग तुम्हें साक्षात् भगवती कहते हैं अर्थात् उनका कहना है कि भगवती ने ही पुनर्जन्म लिया है । क्या तुम्हारे दर्शन और स्पर्श से हम मुक्त नहीं हो सकते ?

माँ पहले हिन्दी में, बाद में बंगला में प्रश्न का उत्तर देती हुई बोलीं–"दर्शन–स्पर्शन ठीक होने पर ही हुआ जाता है, पर दर्शन–स्पर्शन होता कहां है ? तुम लोग जो 'भगवती' कहते हो या 'अन्नपूर्णा' कहते हो, वह सब मुंह की बात है । विग्रहादि में सचमुच तुम लोगों का भगवद् ज्ञान कहां है ? अनेक बातें तुम लोग विश्वास के आधार पर कहते हो । विश्वास को मैं अंध कहती हूँ । कारण अनुभूति के साथ उसका कोई योग नहीं है । शास्त्र में देवी–देवताओं की बातें है। शास्त्रों को पढ़कर तुम लोग ऐसी बातें कह सकते हो, किन्तु शास्त्रों

को मैं टाइम टेबुल कहती हूँ । टाइम टेबुलों में विभिन्न स्थानों के नाम हैं, पर उस टाइम टेबुल को पढ़कर जिस प्रकार उन सभी स्थानों के बारे में धारणा नहीं बनायी जा सकती, उसी प्रकार शास्त्रों में जिन विभिन्न देवी–देवताओं की बातें हैं, उसे केवल शास्त्रों में पढ़कर धारणा नहीं बना लेनी चाहिए। ऐसी धारणा बनाने के पहले कर्म की आवश्यकता है । कर्म करते–करते विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं, तब समझ में आती है । यह जरूर कह सकते हो कि आग का कार्य दाह करना है, ज्ञात ढंग से हो या सकते हो या अज्ञात रूप में हो, आग को स्पर्श करने पर हाथ जलेगा ही । इसी प्रकार भगवती को बिना जाने स्पर्श करने पर तुम लोग फल क्यों नहीं पाओगे? इसके जवाब में यह कहा जा सकता है कि अगर कोई वस्तु बरफ की तरह ठण्डा हो तो वह आग के स्पर्श मात्र से जल नहीं जाती । संभव है कि उस स्थान पर दाग लग जाय । उसी प्रकार भगवती जानकर किसी का दर्शन या स्पर्श करने पर तुम लोगों के मन में अच्छे संस्कार की छाप पड़ जायगी। कुछ भी वृथा नहीं है ।''

भूदेव बाबू–यह तो समझ गया । अब प्रश्न यह है कि तुम भगवती हो या नहीं ?

माँ–इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे पा रही हूँ ।

भूदेव बाबू–क्यों नहीं दे पा रही हो ? मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है, इसके उदाहरण हैं । श्री रामकृष्ण परमहंस देव से उनके स्वरूप के बारे में जब प्रश्न किया गया तब उन्होंने उसे प्रकट किया था ।

माँ–मैं अपनी इच्छा से कुछ बोलने या करने नहीं पाती । जो होता है, वह अपने आप हो जाता है । मैं कौन हूँ, यह बात कभी अचानक मेरे मुँह से निकल जायेगी । इस समय नहीं निकल रही है।

भगवत् उद्देश्य के कर्म से मुक्ति

परेश बाबू[1]–यह सच है कि केवल टाइम टेबुल पढ़कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जाया जा सकता । काम करना आवश्यक है । लेकिन बिना कर्म किये भी तो उच्च अवस्था प्राप्त हो सकती है। चुम्बक जिस प्रकार लोहा को आकर्षित कहता है, भगवान् भी उसी प्रकार हमें धर्म मार्ग में खींच ले जा सकते है ।

माँ–आकर्षण तो है ही । पर हम उसे समझ नहीं पाते । लोगों में धर्म मार्ग पर चलने की जो इच्छा होती है, वह इसी आकर्षण के कारण वर्ना इच्छा नहीं जगती । मुक्त होना, भगवान् को प्राप्त करना मनुष्य का स्वभाव है । कोई भी बद्ध रहना पसन्द नहीं करता । किसी में धर्मभाव बचपन से होता है । इसे सौभाग्य कह सकते हो । सुकृति भी कह सकते हो । दूसरी ओर कोई धर्म जीवन प्राप्त करने का प्रयत्न भी करता है, पर अग्रसर नहीं हो पा रहा है । हताश होकर सोचता है कि उसका कुछ नहीं हुआ । पर यह 'कुछ नहीं हुआ' रूप में धारणा जो है, यही प्रमाणित कर रहा है कि कुछ हुआ है । कम–से–कम क्षण भर के लिए भगवान् की ओर उसका लक्ष्य पड़ा है ।

परेश–वे सब करा भी तो सकते हैं ।

माँ–वे ही तो सब कराते हैं । पर यह बात जबानी कहने से कुछ नहीं होता, उसे अनुभव करना चाहिए । हम लोग घर–गृहस्थी के तमाम कार्य करते हैं, केवल धर्म के मामले में उनके ऊपर निर्भर रहते हैं, यह मिथ्याचार है । बच्चों को जिस प्रकार जबरदस्ती पढ़ाया–लिखाया जाता है, उसी प्रकार जबरन नाम करना चाहिए ।

यही एक लक्ष्य होने का उपाय है । तब सब करते–करते समझ में आता है कि यह सब चुम्बक की तरह मनुष्य को भगवान् की ओर

---

१. डो. श्रीयुत् परेशचन्द्र चक्रवर्ती । आप श्रीयुत् नरेशचन्द्र चक्रवर्ती महाशय के भाई हैं । दोनो भाई भक्तिमान हैं ।

आकर्षित करता है । तुम लोग जिस प्रकार गृहस्थी के तमाम काम करते हो, उसी प्रकार उनका काम भी कुछ-कुछ करो । इस संसार में जो कुछ कर रहे हो, सब उन्हीं के काम हैं, पर उसे समझने के लिए भगवान् को यहां खींचना पड़ेगा । परिवारवर्ग का भगवान् मानकर सेवा और पालन करना होगा । गृहस्थी के कार्य को अपना कार्य सोचने पर सिर्फ बंधन की सृष्टि होती है । लेकिन इसी को अगर भगवान् का कार्य समझा जाय तो मुक्ति मिल जाती है । सभी कार्यों में उन्हें लाना पड़ेगा । उनके बिना कोई उपाय नहीं है ।

सम्पूर्ण रूप में आत्म-समर्पण ही वास्तविक नमस्कार

ठीक इसी समय कुछ औरतें माँ को नमस्कार करने आयी । माँ की बाते बन्द हो गयी । उन लोगों के जाने के बाद माँ आगे कहने लगी-"सुनो, क्या हम लोग ठीक से नमस्कार कर लेते हैं ? नमस्कार कैसा ? जैसे लौटे से पानी गिराना । देखा होगा, लोटे को जब उलट दिया जाता है तब उसके भीतर का सारा जल गिर जाता है । उसी प्रकार नमस्य के चरणों में समस्त भाव उँड़ेल देना ही है वास्तविक नमस्कार । तुम लोग ही कहते हो कि हमारा मस्तिष्क समस्त भाव और चिन्ताओं का आधार है । नमस्कार करते वक्त जब उसे झुकाते है तब उसमें से कुछ भी नहीं गिरता । यह तो जैसे पावडर के डिब्बे को उलटने की तरह हुआ । पावडर का डिब्बा उलटने पर उसके छोटे-छोटे छेदों से सामान्य रूप से पावडर गिरता है, सब पावडर नहीं गिरता ।"

इस प्रसंग में माँ ने आगे कहा-"घट जब तक खाली नहीं होता तब तक भगवान उसे भरते नहीं ।"

फिर भी तुम्हारे हाथ आये

नरेश बाबू प्रणाम की इस व्याख्या को सुनकर बोले–'माँ, अगर इस तरह तुम्हें प्रणाम किया जायगा तो तुम्हारा रंग काला हो जायगा।'

माँ–ठीक है । तुम लोगों के पास जो है, वही भगवान् को दो। कहो–'भगवान्, मेरे पास सिर्फ पाप ही है, वही मैं तुम्हें दे रहा हूँ।' देने का भाव तो कम से कम आये । इस बारे में एक कहानी है। एक भिखारी एक कंजूस के घर भीख मांगने गया था । कृपण कुछ देना नहीं चाहता था और भिखारी बिना कुछ लिए हटना नहीं चाहता था । अन्त में कंजूस नाराज होकर एक मुट्ठी धूल देते हुए कहा– 'ले अपनी भिक्षा ।' भिखारी उसी को ग्रहण करते हुए कहा–'फिर भी तुम्हारे हाथ तो आये ।'

यह सुनकर सभी हँस पडे ।

आगे माँ ने कहा–'बात सत्य है । कृपण ने क्रोधवश धूल दिया जरूर, पर जब उसका क्रोध शान्त हो जायगा तब यह सोचेगा कि एक आदमी को भोजन देने के बदले धूल दिया है और अफसोस करेगा। बाद में जब कोई भिखारी आयेगा तब धूल के बदले अधेला या पैसा देकर सहायता करेगा । तुम लोगों से भी कह रही हूँ कि तुम लोगों के पास जो है, उसे दो । आज अगर अधेला देने का सामर्थ्य है तो वही दो । बाद में पैसा, रुपया, सोना भी दे सकते हो ।'

२३ मई, १९३७ ई., रविवार । आज सवेरे माँ आश्रम में नहीं थी । भिन्न–भिन्न लोगों के घर माँ को ले जाया जा रहा है । फलतः आज सवेरे आश्रम में नहीं गया ।

मैं सृष्टि, स्थिति, लय के पूर्व में भी हूँ

तीसरे प्रहर ६ बजे आश्रम गया । लोगों की बेहद भीड़ में माँ का दर्शन करना कठिन ज्ञात हुआ । शाम के बाद माँ मैदान में आकर बैठी । लेकिन महिलाओं की भीड़ इतनी थी कि पास पहुँचना कठिन था । सुना कि माधवी माता[1] माँ का दर्शन करने आयी है और माँ उनको लेकर विनोद कर रही है ।

रात कुछ अधिक होने पर माँ जहां बैठी थी, वहां मैं आकर खड़ा हो गया । इसी समय प्रमथ बाबू ने आकर पूछा–"माँ, आज रात को बूढ़े लोग कीर्तन करेंगे ?"

माँ–यह बात भोलानाथ से पूछो । तुम लोग आज भोलानाथ को लेकर कीर्तन करो ।

प्रमथ बाबू–तुम शायद मौजूद नहीं रहोगी ? आज अगर तुम मौजूद नहीं रहोगी तो कल जब २० वर्ष से कम वय वाले लड़कों को लेकर कीर्तन होगा तब तुम्हें इस कीर्तन में उपस्थित रहने नहीं दूँगा ।

माँ–(हंसकर) मैं बीस वर्ष वालों के साथ भी हूँ, पचास वर्ष वालों के साथ भी हूँ, सौ वर्ष वालों के साथ भी हूँ और सृष्टि, स्थिति, लय के पूर्व में भी हूँ ।

आज रात को बुजुर्ग काकाओं का कीर्तन होगा सुनकर मैं भोजन करने के लिए घर चला आया । भोजन के पश्चात् पुनः आश्रम आया। जाकर देखा कि माँ नामघर में बैठी है । और लोग बाबा भोलानाथ के साथ कीर्तन कर रहे है । एक घण्टा कीर्तन हुआ । बाबा भोलानाथ भावावेश में नृत्य करने लगे । कीर्तन समाप्त होने पर भोलानाथजी चले गये । इसी बीच माँ भी नामघर में चली गयी थी । हमलोग नामघर में कीर्तन करने लगे ।

---

१. आप एक वैष्णवी साधिका है। ढाका स्थित तेजगाँव में इनका आश्रम है।